512N4R

पाठ 2 प्रेरणा के पुष्प

– लेखक–मण्डल

मनुष्य होने का सहज बोध यह है कि हम ऐसे कार्य करें जिससे अधिक से अधिक लोगों को सुख और आनंद की अनुभूति हो। प्रस्तुत पाठ के दृष्टांत इन्हीं मानवीय भावानुभूतियों को सहज रुप में व्यक्त करते हैं। बुजुर्ग अगली पीढ़ी के लिए फलदार वृक्षों के बीज बोते हैं, वहीं एक बुजुर्ग स्त्री अंजान राहों में सुंदर पुष्पों, छायादार वृक्षों के बीज इस उम्मीद में बिखेरती चलती हैं कि वह रहे न रहे आने वाली पीढ़ियों को इन पुष्पों और वृक्षों के उगने से सुगंध और शीतलता मिलेगी। विवेकानंद और बेंजामिन फ्रेंकलिन के जीवनानुभव के प्रसंग मानव जीवन की इसी सार्थकता को संपूर्णता के साथ प्रेरित और आशान्वित करते हैं।

(1)

एक बूढ़ा आदमी, जिसके बाल सफेद हो गए थे, जमीन खोद रहा था। एक नौजवान ने उस बुजुर्ग को परिश्रम करते देखकर पूछा, "बाबा, यह क्या कर रहे हो?"

"आम का पौधा रोप रहा हूँ–" बूढ़े ने कहा।

"इस उम्र में? इसके फल कब खाओगे, बाबा?"

"मैं फल नहीं खा सकता, तो क्या हुआ बेटे, तुम तो खा सकोगे न? मेरे–तुम्हारे नाती–पोते तो खाएँगे? देखो, वह अमराई मेरे दादा ने लगाई थी, तो उसके फल मैंने खाए। मैं यह आम का पौधा लगा रहा हूँ। इसके फल मेरे नाती–पोते खाएँगे।"

(2)

एक वृद्ध महिला रेलगाड़ी से सफर कर रही थी। खिड़की के पास बैठकर बीच–बीच में, अपनी मुट्ठी से कुछ बाहर फेंकती जा रही थी। एक सहयात्री ने पूछा, "यह आप क्या फेंक रही हैं ?" उस

महिला ने जवाब दिया, "ये सुंदर फूलों और फलों के बीज हैं। मैं इन्हें इस उम्मीद से फेंक रही हूँ कि इनमें से कुछ भी अगर जड़ पकड़ लें तो लोगों को इनसे कुछ फायदा होगा। पता नहीं, मैं इस रास्ते से फिर गुजरूँ या न गुजरूँ, इसलिए क्यों न मैं इस अवसर का उपयोग कर लूँ?"

(3)

अमेरिका के वैज्ञानिक, बेंजामिन फ्रेंकलिन, के बारे में एक अनुकरणीय बात सुनी जाती है। उनके पास एक गरीब विद्यार्थी मदद माँगने के लिए आया। उसे उन्होंने बीस डालर दिए। वे तो यह छोटी–सी रकम देकर भूल गए, लेकिन वह विद्यार्थी इस उपकार को न भूला। जब उसके दिन फिरे, तब वह बीस डालर लौटाने के लिए फ्रेंकलिन के पास आया। फ्रेंकलिन ने कहा, "मुझे याद तो नहीं कि मैंने यह रकम आपको कब दी थी। खैर, आप इसे अपने ही पास रखिए और जब आपके पास कोई ऐसा ही जरूरतमंद आए तो उसे यह दे दीजिए।" उस व्यक्ति ने ऐसा ही किया।

कहते हैं, आज भी वह रकम अमेरिका में जरूरतमंदों के हाथों में घूम रही है।

(4)

स्वामी विवेकानंद बेलूर मठ के निर्माण–कार्य और शिक्षादान के कार्य में बहुत व्यस्त थे। निरन्तर भाग–दौड़ और कठिन श्रम करने के कारण वे अस्वस्थ हो गए थे। चिकित्सकों ने उन्हें वायु–परिवर्तन तथा विश्राम करने पर जोर दिया। विवश होकर वे दार्जिलिंग चले गए। वहाँ उनके स्वास्थ्य में धीरे–धीरे सुधार हो रहा था। तभी उन्हें समाचार मिला कि कोलकाता में प्लेग व्यापक रूप से फैल गया है। प्रतिदिन सैकड़ों लोगों की मृत्यु हो रही है। यह दुखद समाचार सुनकर क्या महाप्राण विवेकानंद स्थिर रह सकते थे ? वे तुरन्त कोलकाता लौट आए और उसी दिन उन्होंने प्लेग रोग में आवश्यक सावधानी बरतने का जनसाधारण को उपदेश दिया। अपने साथ तमाम संन्यासियों और ब्रह्मचारियों को लेकर वे रोगियों की सेवा में जुट गए। कोलकाता में भय तथा आतंक का राज्य फैला था। स्त्री–पुरुष अपने बच्चों को लेकर प्राण बचाने के उद्देश्य से भागे जा रहे थे। ब्रिटिश सरकार ने प्लेग रोग के बचाव के संबंध में कठोर नियम जारी कर दिया था। उससे लोगों में भारी असंतोष था। इस परिस्थिति का सामना करने की भारी चुनौती स्वामी जी के सामने थी। इस कार्य में कितने धन की आवश्यकता होगी और वह कहाँ से आएगा, इस बात की चिन्ता करते हुए किसी गुरुभाई ने स्वामी जी से प्रश्न किया, "स्वामी जी, रुपये कहाँ से आएँगे?" स्वामी जी ने तत्काल उत्तर दिया, "यदि आवश्यकता हुई तो मठ के लिए खरीदी गई जमीन बेच डालेंगे। हजारों

स्त्री–पुरुष हमारी आँखों के सामने असहनीय दुःख सहन करेंगे और हम मठ में रहेंगे ? हम सन्यासी हैं, आवश्यकता होगी तो फिर वृक्षों के नीचे रहेंगे, भिक्षा द्वारा प्राप्त अन्न–वस्त्र हमारे लिए पर्याप्त होगा।"

स्वामी जी ने एक बड़ी–सी जमीन किराये पर ली और वहाँ पर कुटियाँ निर्माण की गईं। जाति व वर्ण–विचार छोड़, असहाय प्लेग के मरीजों को वहाँ पर लाकर उत्साही कार्यकर्त्तागण सेवा–कार्य में रत हुए। स्वामी जी स्वयं भी उपस्थित रहकर सेवा–कार्य करने लगे। शहर की गंदगी साफ करने में, औषधियों का वितरण करने में, दरिद्र नारायणों की अति उत्साह से सेवा करने में, सभी कार्यकर्त्ता सच्चे मन से लग गए। 'यत्र जीव तत्र शिव' मंत्र के ऋषि विवेकानंद मृत्यु की कुछ भी परवाह न करते हुए स्वदेशवासियों को शिक्षा देने लगे कि किस प्रकार नर को नारायण मान सेवा करना योग्य है। जिन डोम–चण्डाल, मोची आदि से सदियों से तथाकथित ऊँची जाति के अभिमानी जन घृणा करते थे, स्वामी जी ने उन्हीं को 'मेरे भाई' कहकर उनका आलिंगन किया।

टिप्पणी

डोम – भारतवर्ष की एक अनुसूचित जाति। कभी ये लोग ही श्मशान में चिता जलाने का काम करते थे।

अभ्यास

पाठ से

1. बुजुर्ग को परिश्रम करते देख कर उनसे नौजवान के क्या सवाल थे ?
2. रेल से सफर करती बुजुर्ग महिला मुट्ठी से बाहर क्या बिखेर रही थी और क्यों ?
3. अमरीकी वैज्ञानिक फ्रेंकलिन बेंजामिन के बारे में अनुकरणीय बात क्या सुनी जाती है ?
4. महाप्राण विवेकानन्द क्यों अस्थिर चित्त हो गए ?
5. विवेकानन्द ने सन्यासी जीवन के बारे में क्या बताया ?
6. अपने काम से विवेकानन्द स्वदेशवासियों को क्या शिक्षा देने लगे ?
7. प्लेग पीड़ितों की सहायता के लिए विवेकानन्द ने क्या–क्या किया ?

पाठ से आगे

1. आपके आस–पास ऐसे लोग होंगे जो दूसरों की सेवा के लिए बार–बार प्रयास करते हैं ऐसे लोगों के बारे में पता कर लिखिए।
2. पाठ का शीर्षक 'प्रेरणा के पुष्प' रखा गया है ? इस पाठ को पढ़ने से आपको क्या अनुभूति हुई दस पंक्तियों में लिखने का प्रयास कीजिए।

4ZS534

3. बुजुर्ग व्यक्ति अपनी आने वाली पीढ़ी के प्रति कितने संवेदनशील होते हैं, यह पाठ से पता चलता है। आपके आस–पास के बुजुर्ग क्या चाहते हैं ? इस पर उनसे बात कीजिए और बातचीत के अंश संक्षेप में लिखिए।
4. किसी बुजुर्ग व्यक्ति के प्रति हम नई पीढ़ी के लोगों का क्या कर्तव्य होना चाहिए ? मित्रों से इस विषय पर बातचीत कर अपने विचार रखिए।
5. पाठ में 'जाति सूचक' शब्द का उल्लेख है। क्या आपको लगता है कि कहीं से भी, ऐसे प्रयोग मानवीय समानता या किसी सभ्य समाज का बोध कराते है। आपस में विचार कर लिखिए।

भाषा से

512N4R

1. पाठ में 'सहयात्री' शब्द का अर्थ है साथ–साथ यात्रा करनेवाला, इस शब्द की रचना 'यात्री' में 'सह' शब्द को जोड़कर की गई है इसी तरह से आप 'सह' शब्द को जोड़कर कुछ अन्य शब्दों की रचना कीजिए।
2. पाठ में सफेद बाल, वृद्ध महिला, सुंदर फूल, गरीब विद्यार्थी, अनुकरणीय व्यक्ति, असहनीय दु:ख, असहाय मरीज आदि शब्द, विशेषण और विशेष्य के उदाहरण हैं इसमें से विशेष्य और विशेषण को पहचान कर लिखिए और पाठ में प्रयुक्त हुए ऐसे ही अन्य शब्द प्रयोग को खोजकर लिखिए।
3. पाठ में इस तरह के प्रयोग आप देख सकते हैं **जिनके** बाल, **उस** बुजुर्ग, **इस** उम्र, **इस** उम्मीद, **इस** रास्ते, **यह** छोटी रकम, रेखांकित शब्दों को हम सार्वनामिक विशेषण कहते हैं, अर्थात् यहां पर सर्वनाम शब्द संज्ञा या सर्वनाम के संकेत या निर्देश के रूप में आये हैं, अत: सार्वनामिक विशेषण के उदाहरण हैं। पाठ से इस प्रकार के और भी सार्वनामिक विशेषणों के उदाहरण ढूंढ़ कर लिखिए।

योग्यता विस्तार

51BJ6E

1. बुजुर्गों को किस प्रकार की उपेक्षा और अपमान, आज हमारे समाज में सहना पड़ता है और क्यों ? इस विषय पर विद्यालय स्तर पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन कीजिए।
2. विवेकानन्द के जीवन और उनके कार्यों के बारे में पुस्तकालय से उनकी जीवनी अथवा जीवन के कुछ प्रसंगों को खोज कर पढ़िए और साथियों के साथ चर्चा कीजिए।